Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed And Refereed Journal)
Vol.3, Issue.IX, September 2024, Pc: PSR-2409011

एन.ई.पी.-2020 के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा में सुधार

Suman
Ph.D., Dept. Of Education, Bhagwant University, Ajmer

Abstract

प्रत्येक देश को अपने नागरिकों को बेहतर सेवा देने और देश को आगे बढ़ाने के लिए अपनी शैक्षिक सुविधाओं का कायाकल्प करना होगा। स्वतंत्रता के बाद भारत द्वारा अपनाई गई तीसरी नीति राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.-*2020)* और नई शताब्दी के लिए देश की पहली शिक्षा नीति है। जनसंख्या की आवश्यकताओं की बदलती गतिशीलता को अनुकूलित करने के लिए, भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति विकसित की गई थी। शिक्षक शिक्षा क्षेत्र को पुनर्जीवित करने का सीधा सा मतलब है आज की वैश्वीकृत दुनिया में सीखने की जरूरतों, चुनौतियों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षा को राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य मानकों पर बहाल करना। एन.ई.पी. शिक्षकों द्वारा अपने पेशे के सम्मान को बनाए रखने के लिए किए गए योगदान, बलिदान और प्रयासों पर जोर देती है। शिक्षक शैक्षिक सुधारों में प्रमुख नायक हैं। एन.ई.पी. के अनुसार, *2030* तक, बहु-विषयक कॉलेज और विश्वविद्यालय तेजी से शिक्षक शिक्षा के लिए प्राथमिक स्थलों के रूप में कार्यभार संभालेंगे। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा प्रणाली की वर्तमान स्थिति और एन.ई.पी.-2020 के प्रस्तावित सुधारों का मूल्यांकन करना है

मुख्य शब्द*(Key Words)*: एन.ई.पी.-2020,शिक्षक,जनसंख्या,शिक्षक शिक्षा, सुविधाएं सुधार और चुनौतियाँ, मूल्यांकन।

प्रस्तावना

एन.ई.पी. 2020 में कहा गया है कि "शिक्षक वास्तव में हमारे बच्चों के भविष्य और हमारे देश के भविष्य को आकार देते हैं" और स्वीकार करते हैं कि, शिक्षक राष्ट्र निर्माण में सक्षम, रचनात्मक, कुशल, रोजगार योग्य और नैतिक नागरिकों का निर्माण करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की घोषणा वास्तव में देश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी, क्योंकि यह 34 वर्षों में पहली बार था कि देश में एक नई शिक्षा नीति थी। पिछली 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति को नई नीति से बदल दिया गया है। नीति बनाने की प्रक्रिया 2015 में शुरू हुई, और अंतिम दस्तावेज़ 2019 में प्रस्तुत किया गया; तब भारत सरकार ने देश के सभी कोनों से सुझाव और टिप्पणियाँ मांगीं। लोगों ने प्रस्तावित नीति पर जबरदस्त सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। अंतिम नीति को 29 जुलाई, 2020 को मंजूरी दी गई थी और यह कुछ प्रमुख मायनों में मसौदा नीति से काफी अलग है। यह एक व्यापक पाठ है जो कई विषयों पर बनाया गया है जो दुनिया भर में शिक्षा द्वारा खोजी जा रही कई आधुनिक चिंताओं को कवर करते हैं।

एन.ई.पी. 2020 मौजूदा सामाजिक-आर्थिक संदर्भ की स्पष्ट समझ और भविष्य की कठिनाइयों को पूरा करने की क्षमता के साथ एक काफी दूरदर्शी योजना है। यदि इसे प्रभावी ढंग से किया जाए तो 2030 तक भारत शिक्षा का वैश्विक केंद्र बन सकता है। जो लोग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हैं वे साधन संपन्न, नागरिक रूप से संलग्न और गतिशील शिक्षार्थी बन जाते हैं, जो कि 21वीं सदी की मांग है। बदले में, शिक्षकों की क्षमता और उनके प्रशिक्षण का शिक्षा की गुणवत्ता पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। एन.ई.पी. 2020 का उद्देश्य शिक्षक विकास के लिए मौजूदा ढांचे और प्रक्रियाओं को बदलना और एक मनोवैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ ढांचा स्थापित करना है जहां अच्छे शिक्षकों को विषय योग्यता, निर्देशात्मक कौशल और वैज्ञानिक योग्यता के साथ जोड़ा जाएगा।

भारत में शिक्षक शिक्षा

शिक्षक शिक्षा उन नीतियों और प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है जो संभावित शिक्षकों को कक्षा, विद्यालय और समुदाय में अपने कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए आवश्यक प्रासंगिक ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल से लैस करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। विषय, शिक्षाशास्त्र और अभ्यास में एक मजबूत पृष्ठभूमि के अलावा, शिक्षकों का भी होना आवश्यक है उत्साही, प्रेरित और सुयोग्य। शिक्षकों की भूमिकाओं और कर्तव्यों की एक विशाल और अंतहीन श्रृंखला होती है। जीवन को आकार देने, समाज के निर्माण और देशों का नेतृत्व करने के लिए उनकी आवश्यकता है। आरंभ करना, सुविधा प्रदान करना, और छात्रों के आत्म-शिक्षा, आत्म-अन्वेषण और आत्म-साक्षात्कार को बनाए रखना शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।शिक्षण क्षमता और कौशल, शैक्षणिक सिद्धांत और पेशेवर अभिविन्यास तीन कर्तव्य हैं जिनमें शिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। देश की आजादी के बाद से भारत में शिक्षक शिक्षा के प्रारूप और डिजाइन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है।

शिक्षक शिक्षा का लगभग हर पहलू चिंताजनक दर से बढ़ा है। यह विकास 1948-49 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना के साथ शुरू हुआ। 1973 में एनसीटीई का गठन शिक्षक शिक्षा में एक बड़ा कदम था।यह पूरे भारत में एक समान शिक्षक शिक्षा प्रणाली स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। एन.पी.ई 1986 ने डी.आई.ई.टी, सी.टी.ई और आई.ए.एस.ई के कार्यान्वयन की वकालत की। इन संस्थाओं ने बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में अपना महत्व साबित किया। एन.सी.टी.ई ने 2009 में एक समेकित शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम रूपरेखा विकसित की, और यह पाठ्यक्रम वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में पूरे भारत में उपयोग में है (कुंडू, 2017)।

शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता

* शैक्षणिक विचारों का आदान-प्रदान करें।
* उनकी जवाबदेही पहचानें.

* पेशे के प्रति समर्पण का स्तर.
* उनके मूल्यों और मान्यताओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करें।
* यदि आप विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को नहीं बदल सकते, तो उनके दृष्टिकोण को नया आकार देने का प्रयास करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा 29.07.2020 को की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में विभिन्न सुधारों का प्रस्ताव है।

1) प्री-प्राइमरी स्कूल से कक्षा 12 तक स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना।
2) 3-6 वर्ष के बीच के सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा सुनिश्चित करना।
3) नई पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना (5+3+3+4)।
4) कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं के बीच कोई सख्त अलगाव नहीं।

एनईपी-2020 का विज़न और मिशन

1) 2030 तक सभी स्वतंत्र शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को अंतःविषय उच्च शिक्षा में बदल देना चाहिए । संस्थान, जो केवल 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड प्रदान करते हैं।4-वर्षीय एकीकृत बी.एड. वाले उम्मीदवार, शिक्षा में डिग्री और एक दूसरा प्रमुख (एक विषय क्षेत्र) होना चाहिए।
2) प्रमुख स्थानीय लोग जिन्हें स्कूलों में पढ़ाने और स्थानीय व्यवसायों, विशेषज्ञता, साथ ही स्थानीय कला, संगीत, खेती, उद्योग, खेल, हस्तशिल्प और अन्य व्यावसायिक शिल्प कार्यों जैसे कौशल का समर्थन करने के लिए "मास्टर

प्रशिक्षक" के रूप में नियुक्त किया जा सकता है।बी.आई.टी.ई., डी.आई.ई.टी. या स्कूल परिसरों में विशिष्ट, स्थानीय शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों तक भी पहुंच होगी।

3) ऑनलाइन शिक्षा: सेवारत शिक्षकों को इसके उपयोग को मजबूत करने और महत्वपूर्ण रूप से विस्तारित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा ,सुधार को पूरा करने के लिए ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण के लिए दीक्षा/स्वयं जैसे तकनीकी प्लेटफार्मों का व्यावसायिक विकास के लिए उपयोग किया जा रहा है।
4) 2021 तक, NEP-2020 पर आधारित एक नया और व्यापक NCFTE विकसित किया जाएगा। एन.सी.टी.ई. सिद्धांत बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के साथ काम करेगी।
5) किसी भी इच्छुक वरिष्ठ या सेवानिवृत्त शिक्षाविद् को निर्देशन के लिए अस्थायी या स्थायी आधार पर नियुक्त किया जाएगा।
6) पीएचडी के दौरान. कार्यक्रम में, छात्रों को शैक्षणिक तकनीकों, पाठ्यक्रम डिजाइन और विश्वसनीय मूल्यांकन तंत्र पर 8-क्रेडिट पाठ्यक्रम से अवगत कराया जाता है।

एन.ई.पी. 2020 की चुनौतियाँ

1. प्रवेश
2. समता
3. गुणवत्ता
4. सामर्थ्य
5. जवाबदेही

नीति की उपलब्धि एवं कार्यान्वयन

- एनईपी-2020 शिक्षकों पर दोष मढ़ने के बजाय शिक्षा प्रणालियों, भर्ती, नियुक्ति और पर्यवेक्षण के इन खराब मानकों के लिए जिम्मेदारी सौंपता है।
- एनईपी 2020 के अनुसार, शिक्षकों को महत्वपूर्ण शैक्षिक नवाचारों में सबसे आगे रहने की आवश्यकता है। शिक्षक तैयारी के ऐसे कार्यक्रम जो बुनियादी शैक्षिक मानकों से कम हैं या अनुत्पादक हैं, बंद कर दिए जाएंगे।
- यह मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता, उत्कृष्ट प्रशासनिक उद्देश्यों और सफल रणनीति कार्यान्वयन के माध्यम से पूरा किया जाएगा। क्योंकि वे ही हैं जो वास्तव में नागरिकों के अगले युग को आकार देते हैं, एन.ई.पी. 2020 शिक्षकों को समाज के सबसे सम्मानित और महत्वपूर्ण तत्व होने का दर्जा प्रदान करेगा।
- शिक्षक शिक्षा के लिए ये दिशानिर्देश इस उम्मीद में बनाए गए थे कि वे अंततः सबसे प्रतिभाशाली दिमागों और क्षमताओं को शिक्षण में करियर अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे।
- एन.ई.पी.-2020 दिशानिर्देशों का उपयोग एनसीएफटीई-2021 के निर्माण के लिए किया जाएगा, जो शैक्षणिक, व्यावसायिक और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक शिक्षा के सभी कार्यक्रमों के लिए ब्लूप्रिंट के रूप में कार्य करेगा।

शिक्षक शिक्षा और भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ

1) पहले भारतीय शिक्षा आयोग, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) ने पुनर्निर्मित, लचीले और अनुकूलनीय पाठ्यक्रम, उपयुक्त स्कूलों का चयन और अभ्यास, शिक्षण की अवधि की सिफारिश की और सुधार के लिए 'शिक्षक प्रशिक्षण' शब्द को 'शिक्षक शिक्षा' से बदल दिया।
2) माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने स्नातक शिक्षकों के प्रशिक्षण के एक वर्ष के भीतर कम से कम 2 विषयों में प्रशिक्षण का सुझाव दिया।

3) कोठारी आयोग (1966) ने सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा के एकीकृत पाठ्यक्रमों के लिए सुझाव दिया, इस प्रकार के पाठ्यक्रम पंजाब के कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और एक ग्रामीण संस्थान में कुछ चयनित विषयों में शुरू किए गए हैं।
4) राष्ट्रीय शिक्षक आयोग (स्कूल शिक्षकों के लिए 1983-85) ने सीनियर सेकेंडरी के बाद 4 साल के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम या स्नातक और प्रशिक्षण के लिए 5 साल के पाठ्यक्रम का सुझाव दिया।
5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और एक्शन प्रोग्राम 1992 में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और प्रशिक्षण स्कूलों को जिला शिक्षा संस्थान (D.I.E.T.), शिक्षक शिक्षा कॉलेज (C.T.E.) और उन्नत अध्ययन संस्थान (I.A.S.E.) में अपग्रेड करने की सिफारिश की गई है।
6) यशपाल समिति (1993) ने स्नातक के बाद एक साल या उच्चतर माध्यमिक के बाद चार साल के बीएड कार्यक्रम का सुझाव दिया और स्वयं सीखने और स्वतंत्र सोच की क्षमता हासिल करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया।
7) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) ने सामग्री डिजाइनिंग और शिक्षण पद्धति पर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 1998 का सुझाव दिया।

सुझाव

1) . शिक्षकों को नई चीजें आज़माने और पाठ को इस तरह से संचालित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए जिससे उन्हें और उनके छात्रों को लाभ हो।
2) उनके पास शिक्षाशास्त्र और सामग्री दोनों में नवीनतम नवाचारों और खोजों तक पहुंच होनी चाहिए, साथ ही चल रहे व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) के लिए कई अवसर भी होने चाहिए।
3) उत्कृष्टता, जिज्ञासा, सहानुभूति और समानता को बढ़ावा देने के लिए, स्कूलों को देखभाल, सहयोग और समावेशिता की संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

4) स्कूल परिसर प्रबंधन समिति, स्कूल परिसर के नेताओं और प्रधानाचार्यों को इस स्कूल की संस्कृति को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति एक सकारात्मक विकास है। नीति व्यावहारिक अनुभवों का परिणाम है, तथ्यपरक है अनुसंधान, हितधारकों से इनपुट, और सर्वोत्तम अभ्यास पाठ है । यह एक महान प्रयास है जो कई मुद्दों से निपटता है जिन्होंने वर्षों से शैक्षिक क्षेत्र को प्रभावित किया है। भारतीय शिक्षकों के लिए इस अवसर को स्वीकार करने और अपने भाग्य का नियंत्रण स्वयं लेने का समय आ गया है। इसे हासिल करने के लिए बड़े सपने देखें और खूब प्रयास करें। एक जानकार, भावुक और आत्मविश्वासी व्यवसायी बनें, अपने विचार, प्रयोग साझा करें और नई चीजें सीखें, साथियों की राय, विश्वास और अनुभवों को आत्मसात करें। नए शिक्षार्थियों के साथ अद्भुत संबंध विकसित करके अपनी यात्रा का आनंद लें, जो आपकी कक्षाओं से गुजरते हैं और जीवन भर सीखते रहते हैं।

संदर्भित ग्रंथ सूची

- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.
- कुंडू, सी. (2017) स्वतंत्र पूर्व भारत में माध्यमिक शिक्षक शिक्षा का विकास: एक संक्षिप्त विवरण कला, वाणिज्य & शिक्षा में एक अंतर्राष्ट्रीय रेफरीड, सहकर्मी-समीक्षित & अनुक्रमित त्रैमासिक जर्नल,Vol.1, 65-71.
- कुमारी, एस. (2020). एन.ई.पी. 2020 शिक्षक शिक्षा के लिए चुनौतियां। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 6(10), 420-424।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद। भारत सरकार. https://ncte.gov.in/website/about.aspx.
- शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। (2009)। पेशेवर एवं मानवीय शिक्षक तैयार करने की दिशा में। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, भारत सरकार, नई दिल्ली। https://ncte.gov.in/website/PDF/NCFTE_2009.pdf
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020)। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- हुड्स, एम.& मलिक, वी. (2022)। एनईपी-2020 के तहत भारत में शिक्षक शिक्षा का कायापलट। भारत शिक्षा. Vol.11, (1).

- शर्मा, एस (2023)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:अवसरों और चुनौतियों का पता लगाना।
- मलिक, सी. (2023)।एनईपी 2020 का महत्वपूर्ण विश्लेषण और इसका कार्यान्वयन.

Poonam Shodh Rachna